वेडहा वर्षेत्र प्राप्त हार हेन के विश्व विकास में हर रामह र दारा स्ताम स्ताम सम्मान हिन्द्र 1212 111月11日 विकारी :मह जिम्स्सीमिवकव्यस्य न्यू स्ट्राइतः सम्हर्भे सीमरामि पत्रहरें सही नी ही मा निम्म मिन र मिवरी हु जुक मिव ब्राम् र्पण्वितियो। शाम करण्यः ॥वनमेठण वर्डिला द्राम् निन्धिंदिरं अवस्तिण्यं सम्नयी मुड्ड हर । विन्सिः। रंडनंत्रीनिर्द्यापुणम् उद्गुन्यम् यूने उत्त सिर्गितंत्रमे हम् । रंडमं द्व मनगरमिना मण्यम् मण्यान् मण्यान् मायाः।। जिन्नेवणः मिनेन्छन् मिन्याम्बारम्बारम् अन्या द्वाराष्ट्रम् मिन्निया हिस्य मनि नर । रिनमेला छा पुना क्रिमी एम्सवयून काउन मुम्पि । अपेषक्ष हु सः॥

多明中

2

छ मुन्यमान इरंदे पुरिनयनक लक इसिन्समी साइन्स्क रभद्रावर्भिक्षेमणीन्ग्रीं निष्णमन्त्रपुरा गुरुनिःन् अपापेन्यान विद्र ए यूर्य सम्विष्टि मेळनवश्रामि व्कर्मित्रा व्याप्त व्याप्त मां जनमन्त्र यद्येवित व्यित्मीहरमी वर्षिष्ययम्भव्यक्रमान्यक्रमाण् मुक्टिस्सम्भाग्भीनिष्ठाप्यक्रिन्युउप्सनः लिउनिर्धिल ल्या व्याप्त विक्रमारी महीनित्यम् क्रमन नम व व्याप्त ग्नाय-विस्मिन्। शास्त्र व प्रान्ति व प्रान्त

यन्त्रीन्भव्ययुग्नः वृत्रवान्युन्समानित्रः युः मेवन्जावः क्रवच्चरवा महिमा उद्योगिया हैवड में भागक च्पितंत्रमित्र उत्पिद्धियाम यु अनाय ने जिसे व्याप है मेरे मुनीमास्वर्भण्याउनिमुसुरे होरीप व्यन्तप्ति हार न्तिनियान्ति वित्ति चित्रकारित्राव्या म्यानित्रे में द्रातित्र देशिः चेपा अक्रा वर्ग करिने अम्मित्ने वर्ग वर्ग एति ।।। क्रिय वर्ग न्द्रप्रमान्यवाने विन्द्रिक्षितीलः सक्लाम्ब्र 

मिन भून

पटनिवृद्यन्वित्र अन्तर्याः यत्रप्राप्त प्रम्पिन्तः भारतीस्त्र देव का उमामा स्माणि । जा वा वा वा दि द्वापाने कुल क्यान्त्विकाण्याः माम्प्रितान्ति। पण्याप्रिमियानि अस्मान्। इत्युम् इन्द्रिट्ल विस्त्रिक्ति विस्ति । विस्ति विद्या विस्ति । विस्ति विस्ति विस्ति । वः सहित्वर देवडमार्शिक्षाणिकाप्तानामान्वप्टर् प्रमु भिर्णिकाइ न्हुसमान्वलः रिलेयन मुन्ने गुर्पेव भारताया प्रमिवणयव शिश्व विद्वार द्वारा मद्रक्षणमञ्च्यक्त्रम्मार्थः भित्रकृतिः भार्

भाववा अतिमान्य व्यापमा अवस्था मान्या मान्या मान यर्भेनीन्छान्मसपुराष्ठान्यः विरम्भाष्ट्रान्य प्रीनन्सम्मकाकार्वम्न वा । १०८१ प्राप्तिकार्गात क्रिःक्येत्रमन् इ. ११क्र नी पन्त्रस्ट १००५ १५५ लि इंस्कान्य वर्षिक राज्या कर्मिन विषय नीलक हैं भर लिख्याप्रिय क्रिपणिलः देख्नम् वृत्यमण्यव क्रिक् क्तिरामम् प्रमाराष्ट्राणियम् विद्यम् प्राचीन्य वर्षेष् मायान्यान्य निवादित्ति है। स्वीति विक्रित्ति लिश्विमाण्या अभव प्रश्व प्रमाण

图明明

3

गरीसुरेश्वा इस्प्रां इस्प्रेम् म्यून ग्वन्द्वपर:1931मदिन्ताःपर्रारेन्सिक्मेंन्सप्रद्वा मव्यव्यवेषः दिवहकः भाउत्रतीयव्यविष्यः यण्डिय गर्व वामा १००। यण्य मिमा ये समिना प्रेम्पा इत्ते ग्रमंगिनां में में भी अपिक भागितां में यद्द्विष्ण उसच्कानाभी।१। भनुः स्रितं व न ७५६ निम्मुनः सरम् उति दे नि उभम्म वयन्ते। १९॥ भट्टपेरे: भन्ने ने सरमिष्ट कार्यन्त ने मन नुजी। १९॥

ने दिश्रामश्चानिक्तां भाषात्र पार्वेद्रमवर्गिक वः वयः वद्यद्वप्रमंगन्यस्य भग्येष्ट्वः भजित्वः मब्दम्। १९९१ मन्त्र्यं म्यानिक्दः स्नारिक्यत व्युवर्वातः सरहवन्सल्येन स्वास्प्येव स्वाद्वा एउ र वर्मा ने: 1931 क्ल्यु क्लेय् पद् र्कि प्रमुख्य क भिष्यित्रण्डिक्सः प्रमान्यम् रहिष्याद्विष्यम् ज्यास्या उर्वा वक्तर १९६१ पृत्त मान द्वा वित्र व

मिया प्राय

15 mm

नंगिक्क सम्भावक वर्षेगाव्या विक नुकर्य पूल चानना बिहानो हे से हिंपुर ने कर मान मिज्ञप्रकार्याजन्य स्मान्य स्मान्य स्पर्मा विमान् । १९ ना मःस्या अजन प्रगानिक प्रमास्य किन वर्तन म् : सदम् दमासे, उद्य उत्र पविष्वितिमस् म्डिन्लीयुन्यम् अभियामः १९१॥ अश

िनमें हराव उसरमिव प्राक्त उर्देशक प्राचन इअपया सन्य द्रांठां भू उत्तास्य उत्तर सुरुपाया सन्य मिव्याश्चर्यात्रक्तर्यात्रकात्रात्राम्बरी भनेयारियाय मेमसद्धित्यात्यन्य, हम्मूली निग्रत्य सद्मिलम् अर्टण्यण्य सम्लिख्य य निर्मित्र ने मान कि कि निर्मित्र के विश्व वर्ष्मक्य मदक लिंग्स्य प्रमाण मेक्निल वास अअग्वास्पार्थास्य सर्वेदविक्रिकेवा 4

6 中中

पन्यस्य व्रवस्थाय दिवन अण्यस्य न ुद्धियम् प्रमापकाष्ट्र न न वां नाक उरा केंका इटक्साइ अलिक् पद्मान पद्मा द्वारा वा न मन्त्रमान्य अधिक स्वार्थित विकार तिक्रियप्य यदमण्य मिन् सक्लक्लाइ मिन्डिय सक्तलिक्क्रिक्र सक्ललिक् भक्तलिकेक्णुन्व, भक्तलिक्क्माकिल् संक् मिन्तिका कि ते अकर्ति के ति कि कार्ति के कि

लक्षकवर्षराया सकललेक क्रम क्रम प्रमण्डिन त्परास् मानु वीन् एवं नाम् विकास्य निरम्भवा विमालय निर्मेणय निरम्य निष्ठे उपय मिरकार रविष्ड्रमण्य निष्ठ निष्ठ या निष्ठण्य निष्ठामीय नित्रभूवय्निष्य विन्युग्य निष्युग्य निरा उह्रविष्ट्राह्म निः सङ्ग्य निद्वाप्ति गणा वनीरागाय निव्यायनियायनियायनिकया पनिवकलप्य निरुष्य निव्ययनिम् लाय निःसं

6

मयास् निग्इनग्य निम्पर्यवन्य निरम् इत्राम् क्रमिद्धानराष्ट्रयाय पाममा उमुक्रपाय, उराक्ष्य उस्मिवाय रावरावनप्रभन्नाप्रभनवाग्यन किन्व कालकिन्व कला केन्य क्रमाला वाष्ट्र भामक राम भाषा जमा इभा कुराख्य प्रायमिक । किन्द्रिन्त, उभरम्सन्य मुख्यमपिण इसन्दी म्डमी यर्ष्ट्या हीय कामद्रम्या य प्रकाल्या न विकल्ड दाना विनिधिगुर्द न समक ल सम्बद्धानुन

नियान्त्र मान्य प्रमाय नियान विकास के नियान मानियान के नियान के निया के नियान के निय दिस्र में प्रमान कर्ति व विद्यान कि विद्यान मंत्रमाप्सवित्रवानाभण्डला मान्या मान्या । कवन्यवन्यवन्यस्य के व्याप्तः स्वतः स्वतः स्वतः यमेवयमय यण्याय प्रमाप्त मुण्य प्रमाप्त मुण्य प्रमाप्त निवस्त्याविक्वय उठन्ति के कि कि प्रमानिक श्चित्पार्द्धनिष्ययम्पियस्य अन्य निर्मायस्य विद्या हात सम्म्यान प्रमान मान्य मान्य मान्य विश्व सम्मान मान्य निवार वय वस्प्व त्रमः जनगणाणाणा प्रकल्ली

4 mg - 7

गण्यस्म वसन्सय, भमः वयज्ञ जाने वर्समन्मा, स स्वान्त्रम् नाक्षित्र व्यान्य मान्यान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य वल राशकारामान्ववादान्य मुद्रास्मान्त्रम् । नमध्मिपद्रवसन्मान रिप्कुरेस व १५५५ व इन् ्याका प्रवास्त्र माना था द्वारा भारत जन्मा निष्ड इत्यम् न्यार १६ ते व्यास्त्रण ्यानिक द्रान्यान स्मायान सामा विकास के दामभी अस्त ने अर्थ है विश्व के स्वापन कर में भी वर्वः रामार्थे। यह मार्थारामान् महः मार्म

वर्षेत्रिहरू । वृद्धिक्ति, अव्यक्ति हुस्य मंत्रेण्यहरू विवादनी विवाद्यवित्र वेस्तिव्यापुडा भन्प पार्चन वा : श्रिपिय इय वा ने वे क वक भुज्य भी व रवस्यवन्तर्भाः म्वहन्स्मि। सुउठक्य ॥ ५३ न्तर्भे विश्वित्रम्य मेम् पुन्न नव् हर्तमान प्रवर्ष म्पार्वित मान्या प्रमुक्त प्रमुक्त वित्र के कार्य के किन्

यक्ष वृत्ति असन्दर्भाइने वृत्ति संविति सन्यन भी म्याप्त्रमया का अपने के निवास कर के मान क्रियुक्त मार्मिन हैं ने हुन के अनुका ने निष्टित हैं । क्राह्म : भारती राष्ट्र वर्ग वर्ग निम् विनिक्षेत्र गरे द्वासानिने चार र र पण जेल नुस्मित्व्व ने । एउ ये चु १६ वन् में वन कव्यन्य प्रिष

भावभिम्कः



pro- to secon Sand Land वीमास्भविष्ठ महाल राषि उसा थानायु अस्ति इतिः शयु श्वि भूलेड क्षि भर रायुग याभय लेका खिलड कमाविच्यम् भग नगरः अन्म माठ १ सेड इंडो भ प्रेम 60 हगवडी मीमार्क भाउन



